

---

## इकाई 2 केन्ज़ियन मॉडल\*

---

### इकाई की रूपरेखा

- 2.0 उद्देश्य
- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 कुल माँग के घटक
  - 2.2.1 उपभोग फलन
  - 2.2.2 निवेश फलन
- 2.3 केन्ज़ियन मॉडल में उत्पादन निर्धारण
  - 2.3.1 संतुलन उत्पादन का निर्धारण
  - 2.3.2 निवेश गुणक
  - 2.3.3 राजकीय व्यय और कर गुणक
  - 2.3.4 खुली अर्थव्यवस्था गुणक
  - 2.3.5 केन्ज़ियन मॉडल की सीमाएँ
- 2.4 साम्यावस्था का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण
  - 2.4.1 बचत फलन
  - 2.4.2 संतुलन उत्पादन का निर्धारण
  - 2.4.3 मितव्ययिता का विरोधाभास
- 2.5 चलनिधि अधिमान
  - 2.5.1 मुद्रा की माँग के घटक
  - 2.5.2 चलनिधि जाल
- 2.6 अर्थव्यवस्था में सरकार की भूमिका
- 2.7 सारांश
- 2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर या संकेत

---

### 2.0 उद्देश्य

---

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस स्थिति में होंगे कि –

- केन्ज़ियन मॉडल में निहित अवधारणाओं का मूल्यांकन कर सकें;
- उपभोग फलन और बचत फलन की अवधारणाओं की व्याख्या कर सकें;
- निवेश माँग को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान कर सकें;
- दर्शा सकें कि केन्ज़ियन मॉडल में संतुलन उत्पादन कुल माँग के स्तर से निर्धारित होता है;
- केन्ज़ियन पद्धति में विभिन्न प्रकार के गुणकों की व्याख्या कर सकें;
- मितव्ययिता के विरोधाभास की व्याख्या कर सकें;
- चलनिधि अधिमान और चलनिधि जाल संबंधी अवधारणाओं की व्याख्या कर सकें, तथा
- अर्थव्यवस्था में सरकार की भूमिका पर केन्ज़ियन दृष्टिकोण की चर्चा कर सकें।

---

\* प्रोफेसर अनन्या घोष दस्तीदार, दिल्ली विश्वविद्यालय।

## 2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम केन्ज़ियन मॉडल के बारे में जानेंगे जिसे सर्वप्रथम ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड कीन्स ने वर्ष 1936 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द जनरल थ्योरी ऑफ एम्प्लॉयमेंट, इंटरेस्ट एंड मनी' में विकसित किया था। यह मॉडल समष्टि अर्थशास्त्र के क्लासिकल मॉडल से कई अर्थों में भिन्न है, जिस पर चर्चा हमने पिछली इकाई में की थी। केन्ज़ियन मॉडल बेरोजगारी के अस्तित्व के साथ-साथ वेतन एवं कीमतों अनम्यता की भी अनुमति देता है। यह मानता है कि प्रभावी माँग का अभाव संसाधनों का पूर्ण नियोजन लाभ प्राप्त करने से रोक सकता है। इसके अलावा, यह राजकीय हस्तक्षेप की आवश्यकता पर भी बल देता है – क्योंकि बाजार तंत्र वेतन दर और कीमतों में अनम्यता के कारण पूर्ण नियोजन साम्यावस्था बहाल करने में सक्षम नहीं होगा।

## 2.2 कुल माँग के घटक

हम देखते हैं कि केन्ज़ियन अर्थशास्त्र ने वर्ष 1930 के दशक की महामंदी की पृष्ठभूमि के समक्ष उस समय महत्व प्राप्त किया, जब संयुक्त राज्य अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन जैसी विकसित अर्थव्यवस्थाओं ने बढ़ती बेरोजगारी, गिरते राजस्व और फर्मों के मुनाफे और अप्रयुक्त क्षमता में वृद्धि के साथ एक गहरी और लंबी मंदी का सामना किया। इस स्थिति में बाजार तंत्र साम्यावस्था बहाल करने में विफल रहा और राजकीय व्यय में वृद्धि के माध्यम से कुल माँग बढ़ाने की केन्ज़ियन नीति ने समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कुल माँग सभी आर्थिक अभिकर्ताओं, चथा परिवारों, फर्मों और सरकार, द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं पर नियोजित व्यय को कहा जाता है। किसी भी बंद अर्थव्यवस्था में कुल माँग के तीन मुख्य घटक होते हैं, यथा – (i) परिवारों का *नियोजित* उपभोग व्यय (C), (ii) फर्मों का *नियोजित* निवेश व्यय (I) तथा (iii) वस्तुओं एवं सेवाओं पर सरकार द्वारा किया गया व्यय (G)।

इस इकाई में हमारी पूरी चर्चा के दौरान, C, I और G में से प्रत्येक को वास्तविक रूप में मानकर चला गया है (यथा, कीमतों में कोई परिवर्तन नहीं)।

### 2.2.1 उपभोग फलन

कीन्स ने उपभोग फलन संबंधी एक अवधारणा प्रस्थापित की, जो कि परिवारों के *नियोजित* उपभोग व्यय (C) और कुल आय (Y) के बीच संबंध दर्शाती है। इसे निम्नलिखित रैखिक समीकरण द्वारा दर्शाया जा सकता है—

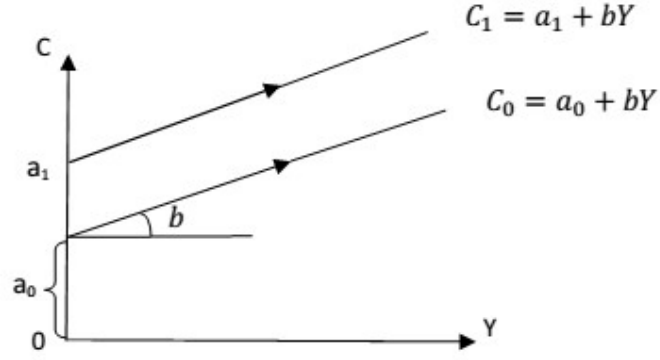
$$C = a + bY \quad \dots (2.1a)$$

सरकार की विद्यमानता में आय का एक अंश करों (T) में भुगतान किया जाएगा। उस स्थिति में उपभोग फलन को प्रयोज्य आय ( $Y_d = Y - T$ ) के फलन के रूप में दर्शाया जाएगा, तदनुसार—

$$C = a + b(Y - T) = a + bY_d \quad \dots (2.1b)$$

आगे चर्चा के लिए, सरलता की दृष्टि से, हम मान लेते हैं कि सरकार की विद्यमानता शून्य है, जिससे  $T = 0$  और  $Y = Y_d$  और होगा। उपभोग फलन 'b' की अभिनति एक धनात्मक अंश मानी जाती है (यथा,  $0 < b < 1$ )।

इसका अर्थ है कि उपभोग फलन को ऊपर की ओर झुकी सीधी रेखा के रूप में दर्शाया जा सकता है, जैसा कि चित्र 2.1 में दिखाया गया है। यह इंगित करता है कि नियोजित उपभोग व्यय कुल आय के स्तर में वृद्धि के साथ बढ़ता है।



चित्र 2.1 उपभोग फलन

ध्यान दें कि 'b' को सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) के रूप में परिभाषित किया जाता है और यह आय में इकाई परिवर्तन से प्रेरित उपभोग में परिवर्तन को निर्दिष्ट करता है। इस प्रवृत्ति (MPC) को एक से कम माना जाता है। तदनुसार, यदि आय में वृद्धि  $\Delta Y$  तक होती है तो उपभोग में प्रेरित वृद्धि  $\Delta C$  पद  $\Delta Y$  का अंश होती है (यथा  $\Delta C = b \Delta Y$  और  $\Delta C / \Delta Y = b < 1$ )। इसका अर्थ है कि आय में समस्त वृद्धि उपभोग पर खर्च नहीं की जाती है, एक अंश  $(1 - b)$  बचाया जाता है। इसका अर्थ है कि वृद्धिशील आय में कुल बचत  $(1 - b)\Delta Y$  होती है।

आइए, उस स्थिति पर विचार करें जहाँ उपभोग फलन  $C = 20 + 0.25Y$  से दर्शाया गया है। यदि कुल आय में 100 रुपये की वृद्धि होती है (i.e.,  $\Delta Y = 100$ ) तो 25 रुपये ( $\Delta C = 0.25 \times 100$ ) अतिरिक्त उपभोग होगा और 75 रुपये  $[(1 - 0.25) \times 100]$  परिवारों की आय में से अतिश्रिक्त बचत होगी। इसी प्रकार, यदि आय में 100 रुपये की गिरावट आती है तो उपभोग में केवल 25 रुपये की कमी आएगी, जबकि बचत में 75 रुपये की कमी आएगी।

उपभोग फलन 'a' का अवरोधन स्वायत्त उपभोग को निर्दिष्ट करता है, जहाँ  $a > 0$  होगा। समीकरण (2.1a) से आप देख सकते हैं कि जब  $Y = 0$  होता है तो हमें  $C = a$  प्राप्त होता है। तात्पर्य यह है कि उपभोग आय शून्य होने पर भी होता है। यह उपभोग पिछली बचत को कम करके अथवा 'निर्बचत' को कम करके अथवा 'निर्बचत' द्वारा वित्तपोषित किया जाता है। चर 'a' में वृद्धि आय के प्रत्येक स्तर पर परिवारों के नियोजित उपभोग में वृद्धि दर्शाता है, ऐसा तब हो सकता है, उदाहरण के लिए, जब उपभोक्ता की विश्वास्यता बढ़ जाए (यथा, भविष्य के विषय में परिवारों की अपेक्षाएँ बढ़ जाएँ)। आप चित्र 2.1 में देख सकते हैं कि अवरोधन में वृद्धि (पद  $a_0$  से  $a_1$  तक) के परिणामस्वरूप उपभोग फलन में पद  $C_0$  से तक समानांतर, ऊर्ध्वमुखी खिसकाव होता है।

कुल उपभोग के दो घटक होते हैं – (i) वह स्वायत्त घटक 'a' जो आय पर निर्भर न करता हो, और (ii) वह 'प्रेरित' घटक 'bY' जो कुल स्तरों पर निर्भर करता हो। चर Y में वृद्धि (ह्रास) परिवारों द्वारा नियोजित उपभोग व्यय में वृद्धि (ह्रास) को प्रेरित करती है।

कुल उपभोग व्यय और कुल आय के अनुपात  $\left(\frac{C}{Y}\right)$  को औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) के रूप में परिभाषित किया जाता है। समीकरण (2.1a) से आप देख सकते हैं कि  $APC = C/Y = a/Y + b$  होता है ध्यान दें कि Y के बढ़ने पर APC में गिरावट आएगी, तबकि MPC स्थिर रहेगा।

## 2.2.2 निवेश फलन

निवेश फलन (I) फर्मों द्वारा मशीनरी, कारखानों व अन्य ऐसी वस्तुओं पर किए गए *नियोजित* निवेश व्यय को निर्दिष्ट करता है जो अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता में वृद्धि करते हैं। केन्ज़ियन मॉडल के सबसे सरल संस्करण में निवेश को 'स्वायत्त' अर्थात् कुल आय (Y) के स्तर से स्वतंत्र माना जाता है। इस स्थिति में निवेश फलन को निम्नलिखित समीकरण द्वारा दर्शाया जाता है—

$$I = \bar{I} \quad \dots (2.2a)$$

समीकरण (2.2a) में परिवर्ती निवेश के ऊपर एक 'शिरा रेखा' ( $\bar{I}$ ) किसी नियत राशि को दर्शाती है। फिर भी हम इस अवधारणा को आसानी से शिथिल कर सकते हैं और निवेश को कुल उत्पादन का फलन बनने दे सकते हैं। इस स्थिति में निवेश फलन निम्नवत् होगा—

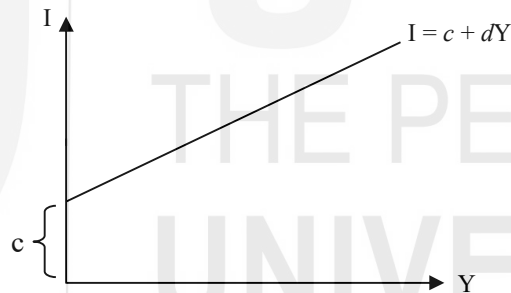
$$I = c + dY \quad \dots (2.2b)$$

जहाँ  $c > 0$  और  $d > 0$ ; निवेश का स्वायत्त हिस्सा है,  $d$  सीमांत निवेश प्रवृत्ति (MPI) है और ' $dY$ ' उस निवेश को निर्दिष्ट करता है जो कुल आय से प्रेरित होता है।

नीचे चित्र 2.2a एक स्वायत्त निवेश फलन दर्शाता है, जबकि चित्र 2.2b एक निवेश फलन दर्शाता है, जिसमें एक ऐसा घटक है जो आय से प्रेरित होता है।



चित्र 2.2a स्वायत्त निवेश



चित्र 2.2b प्रेरित निवेश

ध्यान दें कि निवेश (investment) शब्द उत्पादन उपकरण (जैसे), मशीनरी, भवन, आदि) पर फर्मों द्वारा नियोजित व्यय को इंगित करता है, जो कि उत्पादक क्षमता में वृद्धि करते हैं। यह किसी कंपनी में कॉंपारोट बांड या शेयर खरीदने अथवा किसी बैंक में सावधि जमा खाता खोलने का उल्लेख नहीं करता है।

एक महत्वपूर्ण चर जो फर्मों के निवेश करने संबंधी निर्णय को प्रभावित करता है, ब्याज दर है। जैसे-जैसे ब्याज दर बढ़ती है, ऋण लेने की लागत बढ़ती जाती है, जिसके परिणामस्वरूप फर्मों के नियोजित निवेश व्यय में कमी आती है। निवेश और ब्याज दर के बीच के व्युत्क्रम संबंध को आगे निम्नवत् समझाया जा सकता है —

माना, वर्तमान ब्याज दर  $i$  और एक निवेश परियोजना है जिसकी लागत रु.  $A$ ,  $T$  अवधियों के लिए रहने की आशा है। प्रत्येक अवधि में यह  $R_t$  का लाभ देगी, जहाँ  $t = 1, 2, \dots, T$

होगा। इस उदाहरण में परियोजना P से लाभ प्रवाह के वर्तमान मूल्य की गणना निम्नानुसार की जाती है –

$$P = \frac{R_1}{(1+i)} + \frac{R_2}{(1+i)^2} + \frac{R_3}{(1+i)^3} + \dots + \frac{R_T}{(1+i)^T} \quad \dots (2.2c)$$

यदि लाभ ही निवेश का एकमात्र उद्देश्य हो तो यह परियोजना तभी शुरू की जाएगी जब  $(P - A) \geq 0$  होगा

उदाहरण के लिए, यदि आप 1 वर्ष की अवधि के लिए 10 प्रतिशत ब्याज दर पर 100 रुपए उधार देने को इच्छुक हों तो वर्ष के अंत में आपको 110 रुपए प्राप्त होंगे। अतः 110 प्रतिशत की वर्तमान ब्याज दर पर 110 रुपए का वर्तमान बड़ाकृत मान 100 रुपए है (जहाँ,  $100 = 110 / (1+0.1)$ )।

अब, समग्र अर्थव्यवस्था हेतु किसी ब्याज दर  $i_0$ , के लिए फर्मों द्वारा निवेश के तदनुसारी स्तर  $I_0$  में सभी परियोजनाएँ शामिल होंगी जिनके लिए  $P \geq A$  हो। अब, यदि ब्याज दर बढ़कर  $i_1$  हो जाती है ( $R_t$  एवं  $A$  अपरिवर्तित रहने पर), तो  $P$  घट जाएगा। परिणामतः कुछ परियोजनाएँ जिनके लिए  $P \geq A$  हो तो वे अब अलाभकर सिद्ध होंगी। अतएव, किसी उच्च ब्याज दर पर वे सभी परियोजनाएँ जिनके लिए  $P < A$  न लिया गया हो, निवेश के संबंधित स्तर  $I_1$  में गिरावट दर्शाएँगी। इस प्रकार, जब  $i_0 > i_1$  हो तो हमें  $I_0 < I_1$  प्राप्त होता है।

यदि हम ब्याज दर को निवेश फलन में किसी व्याख्यात्मक चर के रूप में शामिल करते हैं तो हमें निम्नलिखित समीकरण प्राप्त होता है –

$$I = c + dY - e i \quad \dots (2.2d)$$

जहाँ  $c > 0$ ,  $d > 0$  और  $e > 0$  होंगे। यहाँ,  $e$  नियोजित निवेश व्यय की ब्याज प्रभाव्यता को दर्शाता है।

### बोध प्रश्न 1

1) केन्जियन उपभोग फलन के मुख्य अभिलक्षणों पर चर्चा कीजिए।

.....  
 .....  
 .....  
 .....

2) एक आरेख के माध्यम से समझाइए कि (i) स्वायत्त उपभोग में कमी, और (ii) MPC में वृद्धि उपभोग फलन को कैसे प्रभावित करती है।

.....  
 .....  
 .....

3) स्वायत्त निवेश और प्रेरित निवेश के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

4) ब्याज दर और निवेश स्तर के बीच व्युत्क्रम संबंध के कारण स्पष्ट करें।

## 2.3 केन्जियन मॉडल में उत्पादन निर्धारण

केन्जियन मॉडल कुछ अवधारणाओं पर आधारित है। सर्वप्रथम, अर्थव्यवस्था में अनियोजित संसाधन होते हैं। दूसरे शब्दों में, वहाँ अल्प-प्रयुक्त उत्पादक क्षमता होती है (जैसे, क्षमता से कम चल रहे कारखाने, आप्रयुक्त मशीनें, बिना रोजगार के श्रमिक, आदि)। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ऐसी अर्थव्यवस्था में उत्पादन माँग से निर्धारित होता है, अर्थात् उत्पादन हेतु कुल माँग में वृद्धि होने की स्थिति में उपलब्ध उत्पादन क्षमता का प्रयोग उत्पादन को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। दूसरे, मौद्रिक वेतन और कीमतें लचीले नहीं होते हैं (यथा, मूल्य अनम्यता और वेतन अनम्यता व्याप्त होती है)। चूँकि बेरोजगारी व्याप्त होती है और श्रमिक चालू वेतन दर पर काम करने को तैयार होते हैं, दिए गए मूल्य स्तर में उत्पादन की आपूर्ति में वृद्धि संभव होती है। तीसरे, उत्पादन को उपभोग और निवेश दोनों के लिए प्रयोग की जाने वाली समरूप वस्तु माना जाता है।

हम परिवारों, फर्मों और सरकार को मिलाकर इस त्रि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था पर लागू सबसे सरल केन्जियन मॉडल प्रस्तुत करेंगे। अर्थव्यवस्था बंद है (यथा, कोई बाह्य व्यापार नहीं है)। तदंतर हम इस अवधारणा को शिथिल करते हैं और बाह्य व्यापार की अनुमति दे देते हैं।

उक्त त्रि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में कुल माँग में (i) परिवारों द्वारा नियोजित उपभोग (C), (ii) फर्मों द्वारा नियोजित निवेश (I), और (iii) सरकार द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं पर व्यय (G) शामिल होते हैं। प्रारंभ में हम मान लेते हैं कि निवेश पूरी तरह से स्वायत्त है, वह अवधारणा जो बाद में शिथिल हो जाती है। माना जाता है कि सरकार करों को बढ़ाती है और यहाँ हम एकमुश्त करों के साथ-साथ आनुपातिक करों के मामलों पर भी विचार करेंगे। तदंतर हम उन निहितार्थों पर भी विचार करेंगे जो तब उत्पन्न होते हैं जब सरकार परिवारों को हस्तांतरण भुगतान करती है (जैसे, पेंशन, बेरोजगारी भत्ता, आदि)।

अतएव, हमारे सरल केन्जियन मॉडल में,

$$\text{कुल माँग (AD)} = C + I + G$$

चर C, I और G के मानों को प्रतिस्थापित करके हम प्राप्त करते हैं –

$$AD = a + b(Y - T) + \bar{I} + G \quad \dots (2.3)$$

यहाँ T सरकार द्वारा लगाया गया एकमुश्त कर है; निवेश फलन (2.2a) द्वारा दर्शाया गया है।

### 2.3.1 संतुलन उत्पादन का निर्धारण

केन्जियन मॉडल में साम्यावस्था की शर्त यह है कि उत्पादन की कुल माँग कुल आपूर्ति (Y) अथवा अर्थव्यवस्था में प्रस्तुत कुल उत्पादन के बराबर होती है। ध्यान दें कि

साम्यावस्था में परिवारों और फर्मों की योजनाएँ (उपभोग एवं निवेश पर व्यय के संबंध में) पूरी होती हैं।

यदि योजनाएँ पूरी नहीं होती हैं तो कुल माँग में परिवर्तन होगा (क्योंकि परिवार और फर्म अपनी योजनाओं को समायोजित करेंगे) और इस कारण प्रस्तुत उत्पादन भी बदल जाएगा, जिससे स्थिति संतुलन की नहीं होगी।

अर्थव्यवस्था में संतुलन की स्थिति तब आती है जब

कुल आपूर्ति = समग्र माँग

समीकरण (2.3) से हम जानते हैं कि  $Y = a + b(Y - T) + \bar{I} + G$

इसे Y के लिए हल करते हुए संतुलन उत्पादन भी ( $Y_e$ ) निम्नवत् प्राप्त किया जा सकता है -

$$Y = a + bY - bT + \bar{I} + G$$

अथवा

$$Y - bY = a - bT + \bar{I} + G$$

तदनुसार,

$$Y_e = (a - bT + \bar{I} + G)/(1 - b) \quad \dots (2.4)$$

समीकरण (2.4) से आपको यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि (i) स्वायत्त निवेश, (ii) राजकीय व्यय, और (ii) सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) के उच्च स्तरों पर संतुलन उत्पाद अधिक होगा। याद करें कि  $0 < MPC < 1$  होता है, ताकि हर में पद  $(1 - b)$  हमेशा धनात्मक रहता हो।

सरल केन्जियन मॉडल में साम्यावस्था प्राप्त करने की प्रक्रिया को और समझने के लिए अब हम चित्रमय विश्लेषण करेंगे। पहले हम द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के मामले पर विचार करेंगे, जिसमें सरकारी क्षेत्र भी शामिल होगा।

### सरकार के बिना द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था

किसी भी द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में केवल परिवार और फर्म होती हैं। अतः कुल माँग में केवल दो घटक, यथा C और I होते हैं। तदनुसार,  $AD = C + \bar{I}$ ।

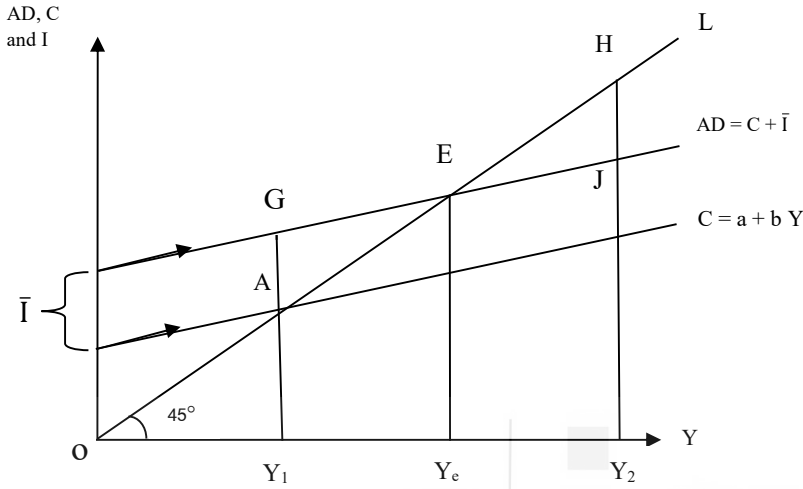
उपर्युक्त समीकरण (2.4) में  $G = T = 0$  मान रखने पर हम देखते हैं कि संतुलन उत्पादन निम्नवत् होता है -

$$Y_e = (a + \bar{I})/(1 - b) \quad \dots (2.5)$$

हमने चित्र 2.3 में उत्पादन के संतुलन स्तर को दर्शाया है। क्षैतिज अक्ष के साथ हम उत्पादन या आय को मापते हैं (याद रखें कि उत्पादन को प्रस्तुत करने की प्रक्रिया में आय उत्पन्न होती है, इसलिए हम आय और उत्पादन शब्दों का परस्पर प्रयोग करते हैं)। ऊर्ध्वाधर अक्ष के साथ हम कुल माँग और उसके घटकों (C और I) को मापते हैं।

ध्यान दें कि OL एक रेखा है जो क्षैतिज अक्ष के साथ  $45^\circ$  बनाती है, जिससे कि इस रेखा से कोई लंब, जैसे कि  $AY_1$ , एक समद्विबाहु त्रिभुज  $AOY_1$  बनाता है, जहाँ  $\angle OAY_1 = \angle AOY_1 = 45^\circ$ , और समद्विबाहु त्रिभुजों के गुणधर्म के अनुसार, दो भुजाएँ  $OY_1$  और  $AY_1$  बराबर होती हैं।

इस परिकल्पना का प्रयोग करके हम क्षैतिज दूरी (उत्पादन या आय) के साथ ऊर्ध्वाधर दूरी (माँग) की तुलना करने में सक्षम होंगे। ध्यान दें कि A पर, जहाँ उपभोग फलन OL को काटता है, उपभोग व्यय  $AY_1$  आय  $OY_1$  के बराबर है, जिससे बचत शून्य होती है।



चित्र 2.3: द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में संतुलन उत्पादन

चित्र में 2.3 हम निवेश ( $\bar{I}$ ) और उपभोग (C) फलनों को जोड़कर कुल माँग वक्र (AD) प्राप्त करते हैं। चूँकि निवेश स्वायत्त है, रेखा AD उपभोग फलन के समानांतर है, यथा AD की प्रवणता उपभोग फलन के प्रवणता के समान है। संतुलन संतुलन उत्पादन E पर, OL के साथ AD के प्रतिच्छेदन पर प्राप्त होता है, जहाँ कुल माँग  $EY_e$  कुल उत्पादन  $OY_e$  के बराबर है। ध्यान दें कि यह साम्यावस्था अद्वितीय है, क्योंकि आय का ऐसा केवल एक स्तर  $OY_e$  है जिस पर कुल माँग कुल आपूर्ति के बराबर है। इस स्थिति में कंपनियाँ उतनी ही बिक्री करने में सक्षम होंगी जितनी उन्होंने योजना बनाई थी और इस कारण उनके मालसूची संभार में कोई अनियोजित परिवर्तन नहीं होगा।

पद  $OY_e$  से कम आय के सभी स्तरों के लिए, यथा E, के बाईं ओर, उत्पादन के लिए अतिरिक्त माँग होती है। उदाहरण के लिए, जब कुल आय  $OY_1 (= AY_1)$  होती है तो कुल माँग  $GY_1$  का संगत स्तर उत्पादन  $AY_1 (= OY_1)$  की आपूर्ति से अधिक होता है। इस उदाहरण में चूँकि फर्मों द्वारा प्रस्तुत उत्पादन की तुलना में माँग अधिक है, उन्हें अपने मालसूची संभार को कम करना होगा। अतः अगली अवधि में फर्मों उत्पादन बढ़ाएँगी और यह उत्पादन  $OY_e$  की ओर बढ़ेगा। उत्पादन (और इस कारण आय) में वृद्धि की यह प्रक्रिया  $OY_e$  पर पहुँचने तक जारी रहेगी, जहाँ उत्पादित राशि ( $OY_e$ ) माँग की गई राशि ( $EY_e$ ) के बिल्कुल बराबर होती है, मालसूची संभार में कोई अनियोजित परिवर्तन नहीं होता है और इस कारण उत्पादन स्तरों में आगे कोई परिवर्तन नहीं होता है।

इसी प्रकार E के दाईं ओर (यथा,  $OY_e$  से अधिक आय के सभी स्तरों पर) उत्पादन की

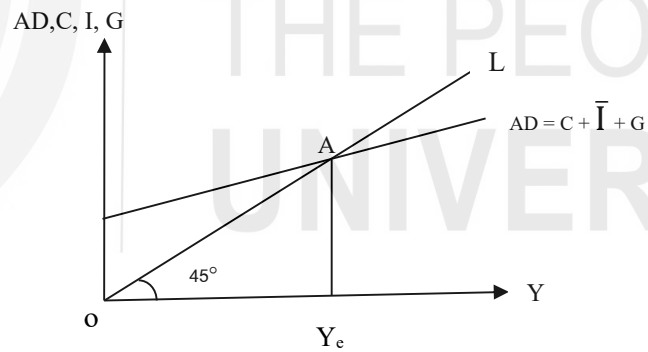


अतिरिक्त आपूर्ति होगी। जब आय  $OY_2$  होती है तो कुल माँग  $JY_2$  का संगत स्तर आपूर्ति  $HY_2 (= OY_2)$  से कम होता है। इस स्थिति में फर्म समस्त उत्पादित राशि ( $HY_2 > JY_2$ ) को बेचने में असमर्थ होंगी और इस कारण उनका मालसूची संभार बढ़ जाएगा (यथा, फर्मों द्वारा अनियोजित माल संचय होगा)। यह फर्मों को अगली अवधि में उत्पादन कम करने के लिए प्रेरित करेगा। यह प्रक्रिया तब जारी रहेगी जब तक कि वे संतुलन उत्पादन  $EY_c (= OY_c)$  पर नहीं पहुँच जातीं, जहाँ माँग और आपूर्ति बराबर होते हैं तथा फर्मों के मालसूची संभार में और अधिक अप्रत्याशित परिवर्तन नहीं होते हैं।

इस चर्चा से हम देखते हैं कि केन्जियन मॉडल में उत्पादन बाजार संतुलन स्थिर रहता है। असंतुलन की कोई भी स्थिति स्व-सुधार करने वाली होती है, जो कि वापस उत्पादन के साम्यावस्था स्तर की ओर झुकाव को प्रेरित करती है।

### सरकार के साथ त्रि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था

समीकरण (2.4) में हमने परिवारों, फर्मों और किसी सरकारी क्षेत्र वाले एक त्रि-क्षेत्रीय मॉडल में संतुलन उत्पादन निष्पादित किया। आरेखीय रूप से इसे चित्र 2.4 में दर्शाया जा सकता है। पहले की भाँति, OL रेखा क्षैतिज अक्ष के साथ  $45^\circ$  का कोण बनाती है, जिसको लेकर हम आय (या उत्पादन) को मापते हैं। कुल माँग को ऊर्ध्वाधर अक्ष के साथ मापा जाता है। अब इसके तीन घटक सामने आते हैं – C, I एवं G, जहाँ निवेश और राजकीय व्यय स्वायत्त होते हैं।



चित्र 2.4: किसी त्रि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में साम्यावस्था

इस त्रि-सेक्टर मॉडल में साम्यावस्था AD वक्र और OL रेखा के प्रतिच्छेदन पर होती है, जहाँ माँग  $AY_c$  कुल आपूर्ति  $OY_c$  के बराबर होती है। आप देखेंगे कि संतुलन आय स्तर  $OY_c$  अद्वितीय होता है और यह साम्यावस्था स्थिर होती है। पद  $OY_c$  से अधिक सभी आय स्तरों पर अतिरिक्त आपूर्ति है, जिससे कंपनियाँ पद  $OY_c$  की ओर उत्पादन में परिवर्तन कर उत्पादन में कमी ला देती हैं। दूसरी ओर, पद  $OY_c$  से कम आय के सभी स्तरों पर अतिरिक्त माँग है, जो फर्मों को उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। ध्यान दें कि AD वक्र की स्थिति कुल माँग के स्वायत्त घटकों (यथा, I, G और स्वायत्त उपभोग

a) के आकार से निर्धारित होती है। इन घटकों के स्तर जितने ऊँचे होंगे, AD रेखा उतनी ही ऊँची होगी और संतुलन उत्पादन स्तर ( $Y_e$ ) उतना ही ऊँचा होगा, जिसका अर्थ है कि केन्जियन मॉडल में उत्पादन माँग-निर्धारित होता है।

### 2.3.2 निवेश गुणक

अब हम केन्जियन मॉडल के तुलनात्मक अचल गुणधर्मों की जाँच करेंगे और गुणक की अवधारणा की व्याख्या करेंगे।

#### स्वायत्त निवेश

एक बार फिर उक्त द्वि-क्षेत्र मॉडल पर विचार करें? जिसमें केवल फर्म और परिवार होते हैं, जैसे कि संतुलन आय  $Y_e = (a + \bar{I})/(1 - b)$  हो। यदि, अन्य बातों के समान रहने पर, स्वायत्त निवेश के स्तर ( $\Delta I$ ) में परिवर्तन होता है तो आय में संबंधित परिवर्तन  $\Delta Y = (1/(1 - b) \times \Delta I$  से दर्शाया जाएगा। तदनुसार,  $\frac{\Delta Y}{\Delta I} = (1/(1 - b))$  होगा। यहाँ हम एक ही समय में स्वायत्त माँग के एक घटक में परिवर्तन पर विचार करते हैं। इसका अर्थ है कि जब  $\Delta I > 0$  हो तो हम यह मानकर चलेंगे कि  $\Delta a = 0$  और इसी तरह आगे भी।

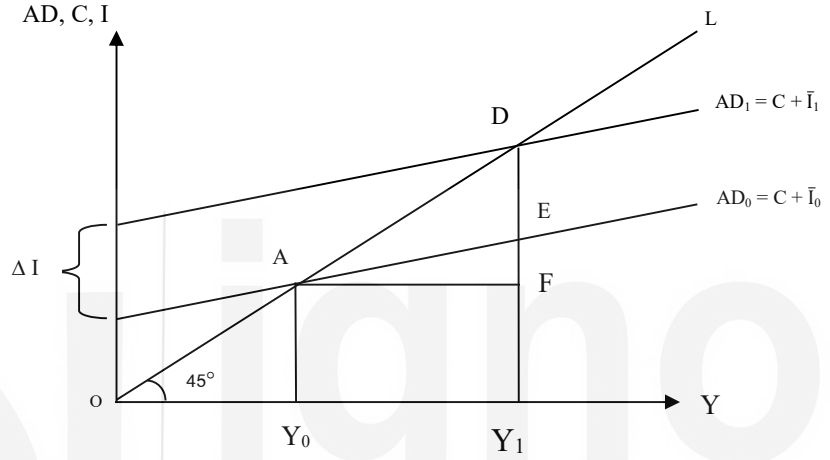
पद  $(\frac{1}{1-b})$  एक से बड़ा है, क्योंकि हमारी अवधारणा यह है कि  $(0 < b < 1)$  होता है। उपर्युक्त का एक निहितार्थ यह है कि जब निवेश में  $\Delta I$  वृद्धि होती है तो आय में संबद्ध वृद्धि  $\Delta I$  से अधिक होती है, क्योंकि यह  $\Delta I$  का गुणक होता है। यह कैसे संभव होता है? इस देखने के लिए व्यय में वृद्धि के एकाधिक अवसरों पर विचार करें, जो कि स्वायत्त व्यय में किसी एक बार की वृद्धि से आरंभ होते हैं।

यदि हम  $I$  में  $\Delta I$  तक वृद्धि करते हैं तो पहले दौर में आय में वृद्धि  $\Delta I$  तक ही होगी, जो कि उपभोग में दूसरे दौर की वृद्धि को  $b\Delta I$  तक प्रेरित करेगा (क्योंकि उपभोग आय का फलन होता है)। चूँकि उत्पादन माँग-निर्धारित होता है, उपभोग माँग में इस वृद्धि से उत्पादन में वृद्धि होती है और इस कारण आय में  $b\Delta I$  तक और वृद्धि होती है। यह उपभोग में  $[b(b\Delta I) = b^2\Delta I]$  तक एक तीसरे दौर की वृद्धि को प्रेरित करता है, जो कि आय में और अधिक वृद्धि ( $b^2\Delta I$ ) को प्रेरित करता है। चौथे दौर में उपभोग माँग  $[b(b^2\Delta I) = b^3\Delta I]$  तक बढ़ जाती है। यह प्रक्रिया उपभोग में वृद्धि के साथ जारी रहती है, जिससे उत्पादन, आय एवं उपभोग का एक और दौर चलता है।

ध्यान दें कि चूँकि  $MPC < 1$  (यथा,  $b < 1$ ) होता है, उपभोग में वृद्धि का प्रत्येक परवर्ती दौर पूर्ववर्ती दौर की तुलना में कमजोर होता है, जिससे पूरी प्रक्रिया धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है। अतएव, स्वायत्त निवेश में एक बार की वृद्धि के कारण आय में कुल वृद्धि निम्नवत् होती है—

$$\Delta Y = (\Delta I + b\Delta I + b^2\Delta I + b^3\Delta I + \dots) = \Delta I (1 + b + b^2 + b^3 + \dots) \quad \dots(2.6)$$

चूँकि  $0 < b < 1$  समीकरण (2.6) के दाईं ओर कोष्ठक में व्यंजक को अभिसारी अनंत ज्यामितीय श्रेणी श्रृंखला के योग के रूप में व्यक्त किया जा सकता है, यथा,  $1 + b^2 + b^3 + b^4 + \dots = 1/(1 - b)$ । तदनुसार  $\Delta Y = [1 / (1 - b)] \Delta I$  जो यह दर्शाता है कि स्वायत्त निवेश में प्रारंभिक वृद्धि के किसी गुणक से आय में वृद्धि होती है और गुणक  $(\frac{1}{1-b})$  होता है। यह चित्र 2.5 में आरेखीय रूप से दर्शाया गया है।



चित्र 2.5: निवेश गुणक

ऊपर चित्र 2.5 में प्रारंभिक साम्यावस्था A पर दिखाई देती है, जहाँ  $AD_0 (= C + \bar{I}_0)$  रेखा OL को प्रतिच्छेद करता है। पद  $I_1$  तक स्वायत्त निवेश में वृद्धि के साथ (यथा,  $\Delta I = \bar{I}_1 - \bar{I}_0$ ) AD वक्र  $AD_1$  की ओर ऊपर खिसक जाता है ( $= C + \bar{I}_1$ ) और नई साम्यावस्था D पर दिखाई देती है, जहाँ,  $AD_1$  रेखा OL को काटता है। ध्यान दें कि जबकि निवेश में  $\Delta I (= DE)$  तक वृद्धि हुई है, आय में परिवर्तन  $\Delta Y (= DF)$  जो कि उसके कारण हुआ है, कहीं अधिक है, यथा  $\Delta Y > \Delta I$  न (जहाँ  $\Delta Y = Y_1 - Y_0 = AF = DF$  और  $DF > DE = \Delta I$ ) जो कि गुणक प्रभाव के सिद्धांत को दर्शाता है।

### प्रेरित निवेश

मान लीजिए कि निवेश फलन उपर्युक्त समीकरण (2.2 b), यथा  $I = c + dY$ , से दर्शाया गया है। इस स्थिति में निवेश की माँग में एक प्रेरित घटक होता है, जो कि आय में परिवर्तन से प्रभावित होता है। अतः संतुलन आय निम्नानुसार ज्ञात की जाएगी –

$$Y = AD = a + bY + c + dY, \text{ जिसमें}$$

$$Y_c = (a + c) / [1 - (b + d)] \quad \dots (2.7)$$

अन्य बातें पूर्ववत् रहने पर यदि इस स्थिति में स्वायत्त निवेश में कोई परिवर्तन होता है (यथा,  $\Delta I = \Delta c$ ;  $\Delta a = 0$ ) तो गुणक  $1 / [1 - (b+d)]$  से दर्शाया जाएगा। ऐसा  $\Delta Y = \{1 / [1 - (b+d)]\} \Delta c$  के कारण होगा। ध्यान दें कि इस उदाहरण में हम यह मानकर चले थे कि  $(b + d) < 1$  (यथा, MPC और MPI का योग एक से कम है)।

### 2.3.3 सरकारी व्यय और कर गुणक

अब हम त्रि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के मामले पर विचार करते हैं। सरलता के लिए हम मान लेते हैं कि निवेश की माँग स्वायत्त है और सरकार व्यय की एक नियत राशि  $G$  को वहन करती है, जो कि स्वायत्त है। सरकार कर  $T$  भी एकत्र करती है। हम दो स्थितियों पर विचार करेंगे – i) सरकार एकमुश्त कर  $T$  एकत्र करती है, और ii) सरकार एक आनुपातिक कर दर  $t$  निर्धारित कर देती है, ताकि उसका कर राजस्व  $T = tY$  रहे। सरकार के बजट घाटे  $B$  को  $B = G - T - TR$  के रूप में परिभाषित किया गया है, जहाँ  $TR$  सरकार द्वारा किए गए हस्तांतरण भुगतानों को इंगित करता है। आगे हम सरलता के लिए यह मानकर चलेंगे कि  $TR = 0$  है।

#### एकमुश्त कर

जब सरकार एकमुश्त कर  $T$  लगाती है तो संतुलन आय ऊपर दिए गए समीकरण (2.4) से दर्शाई जाएगी, यथा  $Y_e = (a - bT + \bar{I} + G) / (1-b)$ । इस स्थिति में किसी भी परिवर्तन के लिए गुणक स्वायत्त व्यय में (या तो निवेश या फिर राजकीय व्यय)  $1 / (1 - b)$  से दर्शाया जाएगा। तदनुसार,  $\Delta Y / \Delta G = 1 / (1 - b)$  अथवा  $\Delta Y / \Delta I = 1 / (1 - b)$ । यदि एकत्र किए गए कर की राशि में वृद्धि होती है तो आय घट जाएगी। ऐसी स्थिति में कर गुणक  $-b / (1 - b)$  से दर्शाया जाएगा। तदनुसार,  $\Delta Y / \Delta T = -b / (1 - b)$ । याद रखें कि कर आय प्रवाह से रिसाव कहलाता है, इसलिए करों में वृद्धि से सुलभ आय में कमी आती है। परिणामतः उपभोग की माँग में कमी आती है, जिससे उत्पादन में गिरावट आती है (चूँकि उत्पादन माँग-निर्धारित होता है, कम माँग के फलस्वरूप उत्पादन कम होता है)। ध्यान देने की बात है कि यह एक दो-तरफा संबंध है – उपभोग आय के स्तर से प्रभावित होता है (जो कि उपभोग फलन से स्पष्ट है) और आय उपभोग की माँग से प्रभावित होती है।

#### संतुलित बजट गुणक

मान लीजिए कि सरकार अपना व्यय बढ़ाती है (यथा,  $\Delta G > 0$ ) और करों में ठीक राशि से कटौती कर देती है (यथा,  $\Delta T < 0$ ) तो इसका अर्थ होगा कि सरकार का बजट अपरिवर्तित रहता है। यदि  $\Delta B$  बजट संतुलन को इंगित करता है तो  $\Delta B = \Delta G - \Delta T = 0$  होगा। वैकल्पिक रूप से हम  $\Delta G = \Delta T$  लिख सकते हैं आप सोच सकते हैं कि इस प्रकार की कार्रवाई का संतुलन आय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि अतिरिक्त माँग का अंतःक्षेपण ( $\Delta G$ ) माँग प्रवाह से रिसाव द्वारा पूर्णतः प्रतिसंतुलित ( $\Delta G = \Delta T$ ) होता है।

तथापि, हम दर्शा सकते हैं कि इस स्थिति में गुणक एक के बराबर होता है, यथा राजकीय व्यय में वृद्धि की मात्रा से आय में वृद्धि होती है। समीकरण (2.4) से हम जानते हैं कि  $Y_e = (a - bT + \bar{I} + G) / (1 - b)$ , जिससे  $\Delta Y = (-b\Delta T + \Delta G) / (1 - b)$ । चूँकि  $\Delta G = \Delta T$ , इसको  $\Delta Y = (1 - b) \Delta G / (1 - b)$ , अथवा  $\Delta Y / \Delta G = 1$  के रूप में लिखा जा सकता है।

### आनुपातिक कर

अब मान लीजिए कि सरकार आय पर कर दर  $t$  से आनुपातिक कर लगाती है, जहाँ  $0 < t < 1$  है। चूँकि  $AD = a + b(Y - tY) + \bar{I} + G$  है, संतुलन की स्थिति को निम्नवत् दर्शाया जाएगा।

$$Y = a + b(1 - t)Y + \bar{I} + G \quad \dots (2.7)$$

पदों को पुनर्व्यवस्थित करके हम उत्पादन का संतुलन स्तर निम्नवत् ज्ञात करते हैं –

$$Y_e = (a + \bar{I} + G) / \{1 - b(1 - t)\} \quad \dots (2.8)$$

समीकरण (2.8) का अर्थ है कि स्वायत्त व्यय गुणक (निवेश अथवा राजकीय व्यय में परिवर्तन के लिए) अब आनुपातिक कर रहित उदाहरणों की तुलना में कम है। आनुपातिक कर रहित गुणक  $1/(1 - b)$  से दर्शाया जाता है। अब आनुपातिक करों की विद्यमानता में यह  $\Delta Y / \Delta G = \Delta Y / \Delta I = 1 / \{1 - b(1 - t)\}$  से दर्शाया जाता है। गुणक के मान में कमी इसलिए उत्पन्न होती है कि प्रत्येक दौर में आय वृद्धि का एक अंश  $t$  करों के रूप में चुकाना पड़ता है।

आप समीकरण (2.8) से देख सकते हैं कि कर की दर में कोई भी वृद्धि संतुलन आय को कम करेगी, जबकि कर की दर में किसी भी कमी का विपरीत प्रभाव होगा। अतः आपको आर्थिक क्रियाकलाप को पुनर्जीवित करने के लिए सरकारों द्वारा करों में कटौती की पेशकश के पीछे के तर्क को देखना चाहिए। तथापि, याद रखें कि हमारी अवधारणा यह है कि अतिरिक्त उत्पादन क्षमता का अस्तित्व भी है, जो कि इस बात का मुख्य कारण होती है कि क्यों करों में कटौती से प्रेरित उपभोग की माँग में वृद्धि से उत्पादन में वृद्धि होती है। अन्यथा, यह उत्पादन में वृद्धि की बजाय मूल्य वृद्धि को बढ़ावा देगा।

### 2.3.4 खुली अर्थव्यवस्था गुणक

किसी भी खुली अर्थव्यवस्था में घरेलू उत्पादन, यथा निर्यात (X) हेतु माँग का एक अतिरिक्त स्रोत होता है। निर्यात स्वायत्त होता है क्योंकि वह घरेलू आय की बजाय विदेशी आय (यथा, घरेलू उत्पाद खरीदने वाले विदेशी निवासियों की आय) पर निर्भर करता है।

अतएव, निर्यात में वृद्धि का उपभोग में प्रेरित वृद्धि के विभिन्न दौरों के माध्यम से आय पर गुणक प्रभाव पड़ेगा। फर्मे और परिवार खुली अर्थव्यवस्था में विदेशों से वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदते हैं। इस प्रकार का आयात (M) घरेलू व्यय और आय प्रवाह से रिसाव कहलाता है। हम यह मानकर चलते हैं कि आयात की माँग घरेलू आय स्तर पर निर्भर करती है।

आयात माँग फलन (M) से दर्शाया जाता है, जहाँ,  $M = h + mY$  आयात माँग का स्वायत्त घटक है। यहाँ  $m$  सीमांत आयात प्रवृत्ति (MPM) है और  $m > 0$  है। ध्यान दें कि निर्यात और आयात दोनों विनिमय दर में बदलाव से भी प्रभावित होते हैं (हम इस प्रकार के मुद्दों पर बाद में अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम में चर्चा करेंगे)। इस इकाई में हम इस बात पर विचार करेंगे कि विनिमय दर में उतार-चढ़ाव के कारण आयात और निर्यात में किसी भी परिवर्तन को स्वायत्त परिवर्तन क्यों माना जाता है।

किसी भी खुली अर्थव्यवस्था में निर्यात अंतःक्षेपण होता है जबकि आयात घरेलू वस्तुओं की कुल माँग के प्रवाह के रिसाव होता है। तदनुसार, कुल माँग निम्नवत् दर्शाई जाती है –

$$AD = C + \bar{I} + G + X - M = a + bY + \bar{I} + G + X - h - mY$$

अतएव, संतुलन की स्थिति निम्नवत् दर्शाई जाती है—

$$Y = a + bY + \bar{I} + G + X - h - mY \quad \dots (2.9)$$

उत्पादन या आय का संतुलन स्तर निम्नवत् दर्शाया जाता है—

$$Y_e = (a - h + \bar{I} + G + X) / (1 - b + m) \quad \dots (2.10)$$

समीकरण (2.10) में स्वायत्त घटक  $I$ ,  $G$  और  $X$  हैं। इन स्वायत्त घटकों में कोई भी परिवर्तन गुणक प्रभाव दर्शाएगा। निवेश, राजकीय व्यय अथवा निर्यात के लिए स्वायत्त व्यय गुणक निम्नवत् दर्शाया जाता है—

$$\Delta Y / \Delta G = \Delta Y / \Delta I = \Delta Y / \Delta X = 1 / (1 - b + m)$$

स्पष्टतया, खुली अर्थव्यवस्था का गुणक बंद अर्थव्यवस्था के गुणक की तुलना में छोटा  $(1/(1 - b))$  होता है। इसका कारण यह है कि आय में वृद्धि का एक अंश  $m$  अब आयात पर खर्च किया जाता है और घरेलू माँग एक बंद अर्थव्यवस्था की तुलना में उस सीमा तक कम है।

सामान्य तौर पर, गुणकों पर इस चर्चा से आपको निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए – (i) गुणक जितना बड़ा होगा, MPC ( $b$ ) और सीमांत निवेश प्रवृत्ति MPI ( $d$ ) का मान उतना ही अधिक होगा और कर की दर ( $t$ ) जितनी कम होंगी  $m$  का मान उतना ही कम होगा; (ii) गुणक स्वायत्त आय में वृद्धि के साथ-साथ गिरावट की स्थिति में भी लागू होता है, जिसका अर्थ है कि माँग के किसी भी स्वायत्त घटक में कटौती की स्थिति में आय में कमी आएगी, और (iii) गुणक का सिद्धांत इस अवधारणा से संचालित होता है कि अर्थव्यवस्था में पर्याप्त अतिरिक्त क्षमता और अनियोजित संसाधन होते हैं, ताकि उत्पादन

को माँग-निर्धारित किया जा सके।

### 2.3.5 केन्जियन मॉडल की सीमाएँ

इस खंड के आरंभ में हमने उल्लेख किया था कि केन्जियन मॉडल मंदी की स्थिति का सामना कर रही ऐसी अर्थव्यवस्था के लिए अधिक प्रासंगिक होता है जिसके पास अत्यधिक उत्पादन क्षमता व्यवहार में हो। आपूर्ति निबाधों वाली (यथा, जहाँ अनेक आपूर्ति गतिरोध हों) अर्थव्यवस्थाओं में माँग में वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पादन की बजाय कीमतों में वृद्धि होने की संभावना होती है। दूसरे, केन्जियन मॉडल उन अर्थव्यवस्थाओं पर लागू नहीं होगा जो पूर्ण नियोजन के निकट चल रही हों, जहाँ उत्पादन में वृद्धि के लिए उत्पादन और माल की कीमतों में वृद्धि की आवश्यकता होगी। तीसरे, केन्जियन मॉडल का प्रयोग सामान्यतः 'अल्पावधि' से संबंधित व्यापक आर्थिक विश्लेषण के लिए किया जाता है। सामान्यतया, एक बार वेतन अनुबंध लिखे जाने के बाद वे कुछ समय तक चलते रहते हैं, साथ ही, बिक्री सूचीपत्रों पर मुद्रित मूल्य कुछ समय के लिए मान्य बने रहने की अपेक्षा की जाती है। अतः अल्पावधि के लिए वेतन और मूल्य अनम्यता की अवधारणा काफी तर्कसंगत है।

#### बोध प्रश्न 2

1) उन अवधारणाओं का उल्लेख करें जिन पर केन्जियन मॉडल आधारित है।

.....  
 .....  
 .....  
 .....

2) आपको एक बंद अर्थव्यवस्था से जुड़ी निम्नलिखित जानकारी दी गई है –

$$C = 10 + 0.75 Y \text{ और } \bar{I} = 20$$

- a) इस अर्थव्यवस्था के लिए कुल माँग फलन ज्ञात करें और संतुलन आय की गणना करें।
- b) मान लीजिए कि स्वायत्त निवेश बढ़कर 25 हो जाता है। अब संतुलन आय कैसे बदलेगी?
- c) यहाँ गुणक का मान क्या है?
- d) यदि हम ऐसे सरकारी क्षेत्र में पदार्पण करते हैं जो (i) केवल एकमुश्त कर, और (ii) केवल एक आनुपातिक कर, जहाँ  $t = 0.1$  है, लगाता हो तो उक्त (b) में गुणक का मान कैसे बदलेगा?

e) यदि अर्थव्यवस्था खुली हो और  $MPM = 0.3$  हो तो (b) में गुणक का मान कैसे बदलेगा?

.....

.....

.....

.....

3) केन्जियन मॉडल के उपयुक्त आरेख का प्रयोग कर व्याख्या करें कि कैसे असंतुलन (अतिरिक्त माँग या अतिरिक्त आपूर्ति) की स्थितियाँ स्वतः-सुधारकारी होती हैं।

.....

.....

.....

.....

## 2.4 साम्यावस्था का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण

केन्जियन मॉडल का वैकल्पिक रूप से बचत-निवेश संबंध के माध्यम से वर्णन किया जा सकता है। जब बचत नियोजित निवेश के बराबर होती है तो अर्थव्यवस्था उत्पादन के संतुलन स्तर पर चल रही होती है।

### 2.4.1 बचत फलन

बचत फलन उपभोग का ही प्रतिबिंब है, जो कि अर्थव्यवस्था में नियोजित बचत (S) और आय (Y) के बीच संबंध दर्शाता है। द्वि-सेक्टर मॉडल में केवल परिवारों और फर्मों को लेकर कुल आय का या तो उपभोग किया जाता है या फिर उसे बचाया जाता है। तदनुसार,

$$Y = C + S \quad \dots (2.11)$$

अधिक उपभोग करने का निर्णय अनिवार्य रूप से कम बचत करने के निर्णय के समान ही होता है।

बचत फलन निम्नानुसार ज्ञात किया जा सकता है –

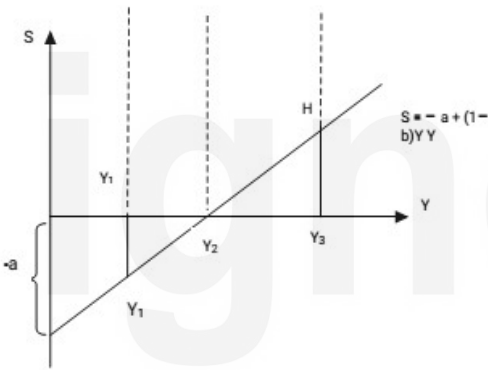
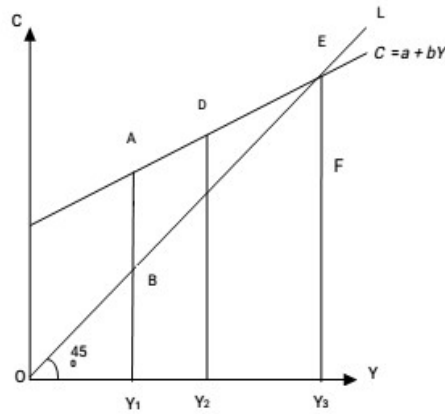
$$S = Y - (a + bY) = -a + (1 - b)Y \quad \dots (2.12)$$

ध्यान दें कि बचत फलन का अंतरोध ऋणात्मक होता है, जो यह दर्शाता है कि 'निर्बचत' (पिछली बचत को कम करना) आय के अपेक्षाकृत निम्न स्तर पर होता है। बचत फलन का प्रावण्य  $(1 - b)$  होता है, जिसे सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) के रूप में जाना जाता है।

यह भी ध्यान दें कि  $MPS = (1 - MPC)$ , जिससे सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) जितनी अधिक होगी, सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) उतनी ही कम होगी। आर्थिक विश्लेषण में प्रायः यह माना जाता है कि गरीब परिवारों की तुलना में अमीर परिवारों की सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) अधिक होती है।



चित्र 2.6 में हम बचत फलन आरेखीय रूप से ज्ञात करते हैं। शीर्ष खंड उपभोग फलन C को निर्दिष्ट करता है, जबकि तल खंड बचत फलन S को निर्दिष्ट करता है।



चित्र 2.6: बचत फलन

आय स्तर  $Y_2$  पर, जहाँ C रेखा OL ( $45^\circ$  रेखा) को काटता है, नियोजित उपभोग  $DY_2$  आय  $OY_2 (= DY_2)$  के बराबर है और नियोजित बचत शून्य है। आय के इस स्तर पर बचत फलन रेखा x-अक्ष को प्रतिच्छेद करती है। पद  $OY_2$  से कम आय के सभी स्तरों के लिए नियोजित उपभोग आय से अधिक है, जिससे बचत ऋणात्मक होती है। उदाहरण के लिए, शीर्ष खंड में आय स्तर  $OY_1$  पर नियोजित उपभोग  $AY_1$  पद  $BY_1 (= OY_1)$  से अधिक है और अंतर तल खंड में ऋणात्मक बचत,  $Y_1G$  में परिलक्षित होता है। पद  $OY_3$  जैसे आय स्तरों के लिए, जो कि  $OY_2$  से अधिक है, नियोजित बचत (तल खंड में  $HY_3$ ) धनात्मक होती है।

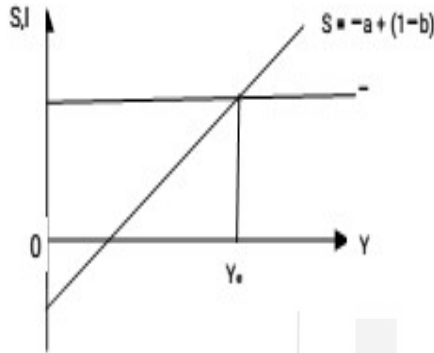
#### 2.4.2 संतुलन उत्पादन का निर्धारण

केवल परिवारों और फर्मों वाली द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में ही उत्पादन बाजार में साम्यावस्था आय (या उत्पादन) के स्तर पर होती है, जहाँ नियोजित बचत नियोजित निवेश के बराबर होती है। इसे निम्नानुसार दर्शाया जा सकता है—

मान लीजिए कि निवेश स्वायत्त है और निवेश फलन  $I = \bar{I}$  से दर्शाया जाता है, जैसा कि समीकरण (2.2a) दिया गया है। याद रखें कि साम्यावस्था में  $Y = C + \bar{I}$  होता है। हमें ज्ञात है कि आय का या तो उपभोग किया जाता है या फिर उसकी बचत की जाती है, यथा  $Y = C + S$  जिन्हें लिखने के लिए हम निम्नानुसार एक साथ रख सकते हैं—

$$C + S = Y = C + \bar{I}, \text{ या, } S = \bar{I} \quad \dots (2.13)$$

सरकार के अभाव वाली किसी भी बंद अर्थव्यवस्था में साम्यावस्था पर नियोजित बचत नियोजित निवेश के बराबर होनी चाहिए। वर्तमान उपभोग (यथा, बचत) से दूर रहने में कम उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करना और निवेश वस्तुओं के उत्पादन के लिए संसाधनों को बिना मूल्य के दिया जाना शामिल होता है। इसे चित्र 2.7 की भाँति आरेखीय रूप से भी दर्शाया जा सकता है, जहाँ बचत फलन और निवेश फलन के प्रतिच्छेदन पर संतुलन आय  $Y_e$  ज्ञात की जाती है।



चित्र 2.7: बचत निवेश समानता

किसी भी त्रि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में उत्पादन बाजार संतुलन स्थिति  $Y = C + \bar{I} + G$  होती है। आय के तीन उपयोग हैं – उपभोग, बचत और करों का भुगतान। तदनुसार,  $Y = C + S + T$  जिन्हें एक साथ रखने पर हम उत्पादन बाजार संतुलन स्थिति को निम्नवत् लिख सकते हैं—

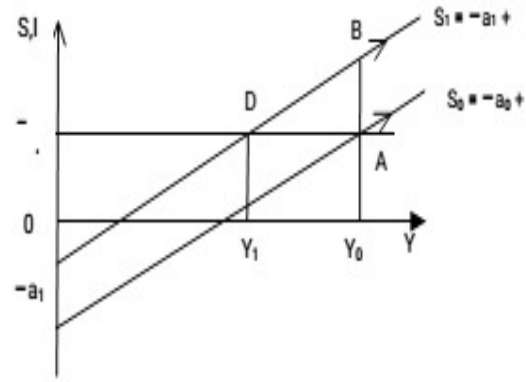
$$C + S + T = Y = C + \bar{I} + G, \text{ or, } S + T = \bar{I} + G \quad \dots (2.14)$$

इसे  $S + (T - G) = \bar{I}$  के रूप में भी लिखा जा सकता है, जो यह दर्शाता है कि किसी भी बंद अर्थव्यवस्था में साम्यावस्था पर नियोजित निवेश कुल बचत के बराबर होना चाहिए, जिसमें घरेलू बचत और सरकारी बचत  $(T - G)$  शामिल होती है। हम समीकरण (2.14) को  $(S - \bar{I}) = (G - T)$  के रूप में भी लिख सकते हैं।

उपर्युक्त का एक निहितार्थ यह है कि जब नियोजित निवेश नियोजित बचत  $(S - \bar{I} > 0)$  से कम होता है तो सरकार बजट घाटा  $(G - T > 0)$  झेल रही होती है। बजट घाटे का वित्तपोषण परिवारों से उधार लेकर होता है।

### 2.4.3 मितव्ययिता का विरोधाभास

केन्जियन मॉडल में बचत की भूमिका के संबंध में एक महत्वपूर्ण परिणाम को 'बचत विरोधाभास' या 'मितव्ययिता का विरोधाभास' कहा जाता है। आप जानते हैं कि परिवार की ओर से बचत करना सद्गुण माना जाता है। अधिक बचत करने से दीर्घकाल में परिवार की संपत्ति और धन में वृद्धि होती है। समग्र अर्थव्यवस्था के लिए, हालाँकि, बचत में वृद्धि अच्छी नहीं मानी जा सकती है, यह एक बुराई कहला सकती है। जब परिवार अधिक बचत करने की योजना बनाते हैं तो कुल बचत या तो समान रहती है या फिर घट भी सकती है। आइए, इसे एक आरेख के माध्यम से समझते हैं (देखें चित्र 2.8)।



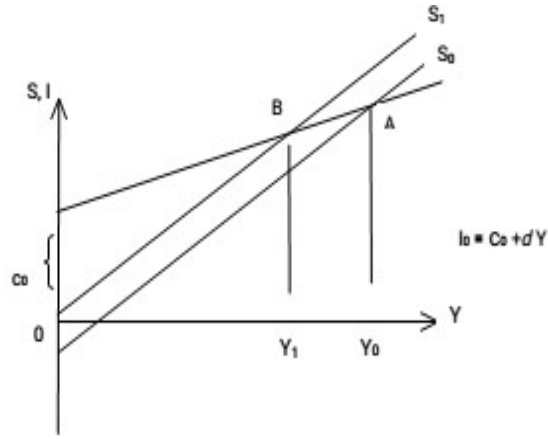
चित्र 2.8: मितव्ययिता का विरोधाभास

चित्र 2.8 में अर्थव्यवस्था में संतुलन बिंदु A पर है, जहाँ  $S = I$  और प्रस्तुत उत्पादन  $Y_0$  है। मान लीजिए कि परिवारों की नियोजित बचत के स्वायत्त घटक में वृद्धि हुई है, यथा आय के प्रत्येक स्तर पर नियोजित बचत अधिक है। इसमें बचत फलन को  $S_0$  से  $S_1$  तक ऊपर की ओर खिसकाना शामिल है। ध्यान दें कि  $S_1$  पद  $S_0$  के समानांतर है क्योंकि सीमांत बचत प्रवृत्ति MPS में कोई परिवर्तन नहीं है। अब संतुलन उत्पादन स्तर घटकर  $Y_1$  हो जाता है।

चूँकि नियोजित निवेश में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, अब अर्थव्यवस्था में असंतुलन है। नियोजित निवेश ( $DY_1$ ) पूर्व की भाँति ( $DY_1 = AY_0$ ) ही है। चूँकि लोग अब अधिक बचत करना चाहते हैं (बचत फलन  $S_1$  पर खिसक गया है), आय कम होनी चाहिए, ताकि बचत पहले जैसी ही रहे। विरोधाभास यह है कि मितव्ययिता में वृद्धि के बावजूद कुल बचत में कोई बदलाव नहीं आया है।

अधिक बचत करने की इच्छा नियोजित उपभोग को कम कर देती है, जिससे कुल माँग कम हो जाती है और इस कारण उत्पादन (और आय) भी निम्न आय स्तरों पर बचत समरूपता से कम है –  $BY_0$  की बजाय कुल बचत  $DY_1$  तक गिरती है, क्योंकि आय  $OY_1$  तक गिर गई है।

यदि निवेश फलन में कोई प्रेरित घटक हो और  $I = c + dY$  से दर्शाया गया हो, जैसा कि समीकरण (2.2.b) में है, तो नियोजित बचत में वृद्धि वास्तव में साम्यावस्था पर बचत के निचले स्तर तक ले जा सकती है, जैसा कि नीचे चित्र 2.9 में दर्शाया गया है।



चित्र 2.9: मितव्ययिता का विरोधाभास (प्रेरित निवेश)

चित्र 2.9 में बचत फलन  $S_0$  से  $S_1$  पर खिसक जाता है। इस स्थिति में उपभोग की माँग में कमी (नियोजित बचत में वृद्धि के कारण) कम उत्पादन की ओर ले जाती है, जो कि आगे प्रेरित  $S$  में कमी की ओर ले जाता है, जिससे आय में और कमी आती है। संतुलन आय के निचले स्तर ( $OY_1 < OY_0$ ) पर नियोजित बचत तदनुसार कम ( $BY_1 < AY_0$ ) होती है, जहाँ अधिक बचत करने की इच्छा साम्यावस्था पर कुल बचत कम करने की ओर अग्रसर करती है।

यह परिणाम अल्पावधि में बचत की भूमिका के विषय में एक महत्वपूर्ण परिज्ञान प्रदान करता है। किसी ऐसी अर्थव्यवस्था जो आपूर्ति की कमी का सामना न करती हो और अतिरिक्त उत्पादन क्षमता रखती हो, अनिवार्य रूप से बचत करने की इच्छा में वृद्धि कुल माँग को कम करके उत्पादन घटा देती है। अतः एक निम्न संतुलन आय स्तर पर कुल बचत वही रहती है या फिर पहले की तुलना में कम भी हो सकती है। ध्यान दें कि अधिक बचत के कारण उत्पादन में इस तरह की गिरावट अल्पावधि की परिघटना हो सकती है। दीर्घावधि में उच्च बचत उच्च निवेश की अनुमति देती है और इस प्रकार अतिरिक्त उत्पादक क्षमता का निर्माण करती है। आप आर्थिक संवृद्धि का अध्ययन करते समय दीर्घकाल में बचत की भूमिका के विषय में अधिक जानेंगे।

### बोध- प्रश्न 3

1) (a) किसी द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में (केवल परिवारों और फर्मों वाली) नियोजित बचत और नियोजित निवेश के संदर्भ में उत्पादन बाजार संतुलन की स्थिति ज्ञात करें।

(b) किसी त्रि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में (परिवारों, फर्मों और सरकार वाली) यदि सरकार बजट अधिशेष चलाती हो तो साम्यावस्था पर बचत और निवेश के बीच क्या संबंध होगा?

.....

.....

.....

.....

2) 'मितव्ययिता के विरोधाभास' का क्या अर्थ है? निम्नलिखित स्थितियों को उचित आरेख से स्पष्ट करें –

(i) निवेश माँग स्वायत्त है, और (ii) निवेश माँग में एक प्रेरित घटक है।

3) किसी द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में (केवल परिवारों और फर्मों वाली) उपभोग फलन  $C = 10 + 0.75 Y$  और  $I = 20$  से दर्शाया जाता है।

(i) बचत फलन ज्ञात करें।

(ii) नियोजित बचत और निवेश की समानता के संदर्भ में संतुलन उत्पादन ज्ञात करें।

(iii) मान लीजिए कि बचत करने की इच्छा में वृद्धि हुई है जबकि नियोजित निवेश अपरिवर्तित रहता है। नया बचत फलन  $S = -8 + 0.25 Y$  से दर्शाया गया है। नया संतुलन आय स्तर ज्ञात करें।

## 2.5 चलनिधि अधिमान

केन्जियन मॉडल संबंधी अपने मान को परिपूर्ण करने के लिए हमें 'चलनिधि अधिमान' या इस पद्धति में मुद्रा की माँग संबंधी अवधारणा पर चर्चा करनी होगी। कीन्स का एक महत्वपूर्ण योगदान मुद्रा की माँग संबंधी ब्याज संवेदनशीलता को इंगित करने में ही रहा है। ध्यान दें कि मुद्रा की माँग 'वास्तविक शेष राशि' की माँग को इंगित करती है, यथा सामान्य मूल्य स्तर से मामूली धन की माँग कम हो जाती है। चूँकि केन्जियन पद्धति में कीमतें नियत रहती हैं, मुद्रा की माँग में कोई भी परिवर्तन अनिवार्य रूप से वास्तविक शेष राशि की माँग में परिवर्तन होता है।

### 2.5.1 मुद्रा की माँग के घटक

सामान्यतः लोगों द्वारा पैसा रखने की इच्छा क तीन प्रमुख कारण होते हैं। यही मुद्रा की माँग के मुख्य घटक कहलाते हैं। यथा – (i) विनिमय माँग, (ii) निवारक माँग, और (iii) अपेक्षी माँग। आइए, उपर्युक्त में से प्रत्येक पर चर्चा करें।

**विनिमय माँग (Transaction Demand):** लोग नकदी इसलिए रखते हैं कि यह विनिमय का माध्यम होती है और लेन-देन करने में उपयोगी सिद्ध होती है। इससे पैसे के लिए लेन-देन की माँग उत्पन्न होती है। आपने देखा होगा कि अधिक आय वाले लोग

लेन-देन के लिए गरीबों की तुलना में अधिक पैसा रखते हैं। अतः यह माना जाता है कि लेन-देन के लिए लोग जितनी तरल संपत्ति रखना चाहते हैं, वह उनकी आय के अनुक्रमानुपात में होती है।

**निवारक माँग (Precautionary Demand):** लोग तरल संपत्ति इसलिए भी रखना चाहते हैं कि यह चिकित्सीय आपात स्थिति, दुर्घटना आदि जैसी आकस्मिकताओं में उपयोगी होती है। यह मान लेना उचित ही होगा कि मुद्रा की निवारक माँग भी आय का एक वर्धमान प्रकार्य है।

**अपेक्षी माँग (Speculative Demand):** कीन्स के अनुसार, लोग परिसंपत्ति बाजार में सट्टेबाजी के लिए पैसा भी रखते हैं, जो कि मुद्रा की अपेक्षी माँग को जन्म देता है। यह समझने के लिए कि मुद्रा की अपेक्षी माँग ब्याज दर के प्रति संवेदनशील क्यों होती है, एक ऐसी अर्थव्यवस्था पर विचार करें जहाँ केवल दो प्रकार की वित्तीय परिसंपत्तियाँ हों – मुद्रा या पैसा और ऋणपत्र या बांड। तरल संपत्ति लेन-देन के लिए उपयोगी तो होती है किंतु यह कोई लाभ नहीं देती है, जबकि ऋणपत्र ब्याज आय और बांड की कीमतों में वृद्धि होने पर पूँजीगत लाभ की संभावना की प्रस्तुत करते हैं। बांड की कीमत और ब्याज के बीच विपरीत संबंध होता है।

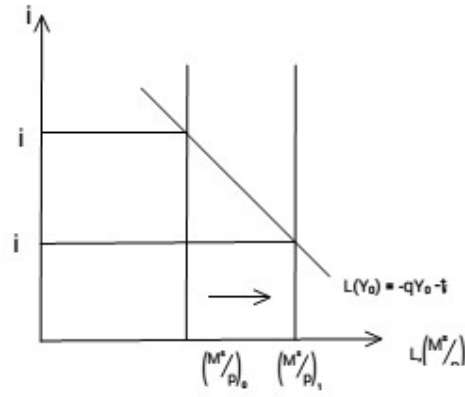
अब हम मुद्रा की अपेक्षी माँग पर ब्याज दर में परिवर्तन के प्रभाव को देखते हैं। जब ब्याज दर अधिक होती है तो लोग अधिकांशतः इसके गिरने की ओर बांड की कीमतों में वृद्धि की आशा करते हैं। अतः वे पूँजीगत लाभ की अपेक्षा में मुद्रा का संचय कम करेंगे और बांड खरीदेंगे। अतएव, ब्याज की ऊँची दरों पर मुद्रा की माँग कम होगी। इसके विपरीत, ब्याज की कम दरों पर लोग ब्याज दरों के बढ़ने (यथा, बांड की कीमतों में गिरावट) की अपेक्षा करते हैं। पूँजीगत हानि लोगों को बांड बेचने और पैसे की माँग बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगी। इस प्रकार मुद्रा की अपेक्षी माँग ब्याज की दर से *विपरीत* रूप से संबंधित होती है।

सामान्यतः ब्याज की बाजार दर जितनी अधिक होती है, धन रखने की अवसर लागत (ब्याज आय छोड़ दी जाती है) उतनी ही अधिक होती है। इसलिए जब ब्याज दरें बढ़ती हैं तो लोग मुद्रा की माँग को कम कर देते हैं और इसकी बजाय ब्याज वाली परिसंपत्तियों को रखने का प्रयास करते हैं, जो कि ब्याज दरों और मुद्रा की माँग के बीच के विपरीत संबंध की व्याख्या करता है। यह मुद्रा की माँग और ब्याज दरों के बीच विपरीत संबंध को समझने का एक और तरीका है, बिना अपेक्षी माँग की विद्यमानता के।

ऊपर की गई चर्चा से आप देखेंगे कि मुद्रा माँग फलन को निम्नवत् प्रस्तुत किया जा सकता है –

$$L = q Y - t.i \quad \dots (2.15)$$

जहाँ  $q > 0, t > 0$ ;  $L$  वास्तविक शेष राशि की माँग है,  $Y$  कुल आय है और  $i$  ब्याज की दर है। आरेखीय रूप से मुद्रा माँग फलन को चित्र 2.10 में अधोमुखी प्रवण रेखा के रूप में दर्शाया जा सकता है, जहाँ ब्याज दर को ऊर्ध्वाधर अक्ष के साथ प्रस्तुत किया जाता है और मुद्रा की माँग क्षैतिज अक्ष के साथ होती है।



चित्र. 2.10: मुद्रा की माँग

ध्यान दें कि मुद्रा माँग फलन  $L(Y_0)$  आय स्तर  $Y_0$  पर मुद्रा की माँग का प्रतिनिधित्व करता है। पद  $L(Y_0)$  के साथ संचलन मुद्रा माँग फलन की ब्याज संवेदनशीलता को दर्शाता है। जैसे ही ब्याज दर  $i_0$  से  $i_1$  तक गिरती है, मुद्रा की अपेक्षी माँग के कारण मुद्रा की माँग में वृद्धि होती है, जैसा कि ऊपर की चर्चा की गई है।

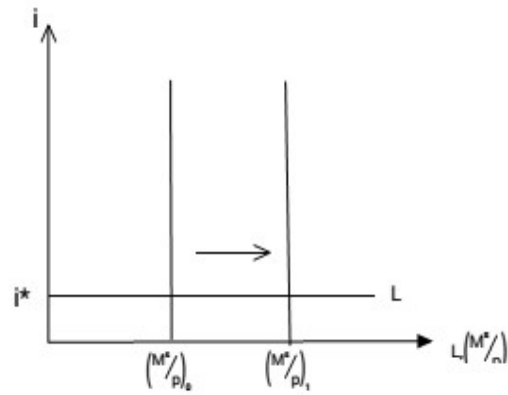
सभी आय स्तरों के लिए  $Y_0$  से अधिक मुद्रा की माँग प्रत्येक ब्याज दर पर अधिक होगी (क्योंकि मुद्रा की विनिमय और निवारक माँग आय के साथ बढ़ती है), और मुद्रा माँग वक्र दाईं ओर खिसक जाएगा। दूसरी ओर, पद  $Y_0$  से कम आय के लिए मुद्रा की माँग प्रत्येक ब्याज दर पर कम होगी और मुद्रा माँग वक्र बाईं ओर खिसक जाएगा।

मुद्रा की आपूर्ति देश के केंद्रीय बैंक द्वारा निर्धारित की जाती है (इसके विषय में आप बाद की इकाइयों में अधिक जानेंगे) और ऊर्ध्वाधर रेखा  $M^s/P$  से दर्शाई जाती है, जहाँ  $M^s$  मात्रिक मुद्रा आपूर्ति है,  $P$  मूल्य स्तर है और  $M^s/P$  वास्तविक मुद्रा की आपूर्ति है।

मुद्रा बाजार में साम्यावस्था मुद्रा की आपूर्ति और मुद्रा की माँग के प्रतिच्छेदन पर होती है। ध्यान दें कि अधोमुखी प्रवण मुद्रा माँग फलन के साथ मुद्रा की आपूर्ति में कोई भी वृद्धि  $(M^s/P)_0$  से  $(M^s/P)_1$  तक ब्याज दर में ( $i_0$  से  $i_1$  तक) कमी ला देती है।

### 2.5.3 चलनिधि जाल

यदि ब्याज दरें असामान्य रूप से कम हो जाती हैं और न्यूनतम संभव स्तर पर पहुँच जाती हैं तो एक विशेष स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इससे मुद्रा की माँग असीम रूप से लोचदार हो जाती है और अर्थव्यवस्था को 'चलनिधि जाल' (liquidity trap) का सामना करना पड़ता है। ऐसा तब हो सकता है जब ब्याज दरें इतनी नीचे गिर गई हों (और बांड की कीमतें इतनी अधिक बढ़ गई हों) कि हर कोई आशा करता है कि ब्याज दरें बढ़ेंगी (और बांड की कीमतें गिरेंगी)। अतः इसलिए पूँजीगत हानि होने के भय से कोई भी ऋणपत्र नहीं रखना चाहेगा और हर कोई पैसा ही रखना चाहेगा। इस स्थिति में मुद्रा वक्र क्षैतिज हो जाता है, जैसा कि चित्र 2.11 में दर्शाया गया है, और समीकरण (2.16) में  $t$  अनंत की ओर चला जाता है।



चित्र 2.11 चलनिधि जाल

जब ब्याज दरें  $i^*$  जैसे न्यूनतम स्तर पर पहुँचती हैं तो व्यवस्था में अतिरिक्त चलनिधि का कोई अंतःक्षेपण अवशोषित हो जाता है, क्योंकि फिर लोग स्वेच्छा से ब्याज की अपरिवर्तित दर  $i^*$  पर बांड की बजाय मुद्रा (चलनिधि) रखते हैं। अतएव, एक बार जब अर्थव्यवस्था चलनिधि के जाल में फँस जाती है तो मौद्रिक नीति  $i^*$  से अधिक ब्याज दर को कम नहीं कर सकती है और इस कारण वह  $i^*$  जैसे वास्तविक चरों को प्रभावित नहीं कर सकती है। मुद्रा की आपूर्ति में किसी भी वृद्धि  $(M^s/P)_0$  से  $(M^s/P)_1$  तक का ब्याज दर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, जो कि  $i^*$  पर अपरिवर्तित रहती है। एक बार मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों के विषय में जान जाने के बाद आप देखेंगे कि परंपरागत मौद्रिक नीति तब अप्रभावी हो जाती है जब अर्थव्यवस्था चलनिधि के जाल में होती है जबकि राजकोषीय नीति इस स्थिति में बहुत प्रभावी सिद्ध होती है।

वर्ष 2007–2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान नीति मंडलों में चलनिधि जाल की अवधारणा उस वक्त महत्वपूर्ण हो गई जब संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान जैसी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में ब्याज दरें धराशायी होकर शून्य (अमेरिका) या लगभग शून्य (जापान) हो गई। इस स्थिति में परंपरागत मौद्रिक नीति का प्रयोग सरकारी बांडों पर ब्याज की दर को और कम करने के लिए नहीं किया जा सकता था। अपरंपरागत मौद्रिक नीति उपायों के प्रयोग से जुड़े नीतिगत प्रयोगों का पता लगाया जाना था। राजकोषीय नीति उपायों को भी नियोजित किया गया था, परंतु सरकारी ऋण स्तरों में वृद्धि ने ऋण प्रतिपालिता के संबंध में चिंताएँ बढ़ा दीं।

अगले पाठांश में हम केन्ज़ियन मॉडल में राजकोषीय नीति की भूमिका का पता लगाएँगे और इनमें से कुछ नीतिगत मुद्दों पर चर्चा करेंगे।

## 2.6 अर्थव्यवस्था में सरकार की भूमिका

क्लासिकल अर्थशास्त्रियों ने, जैसा कि हमने इकाई 1 में देखा, कीमतों और वेतन दर के निर्धारण में न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप का समर्थन किया। उनके अनुसार सरकार की सक्रियता कानून एवं व्यवस्था, न्याय और रक्षा तक ही सीमित होनी चाहिए। उनका मानना था कि कीमतें और वेतन दर लचीली होती हैं, और बाजारों में पूर्ण प्रतिस्पर्धा होती है। परिणामतः, अर्थव्यवस्था में कोई बेरोजगार नहीं रहता है।

केन्ज़ियन अर्थशास्त्र क्लासिकल अर्थशास्त्र के ठीक विपरीत है। केन्ज़ियन मॉडल के



अनुसार, अर्थव्यवस्था में सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बाजार में साम्यावस्था लाने के लिए सरकार को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। कीन्स ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कीमतों और वेतन दर में अनम्यता वास्तविक दुनिया में बाजार तंत्र के सुचारु संचालन को रोकती है। उन्होंने व्यापक आर्थिक संदर्भ में उत्पादन और रोजगार के स्तर को निर्धारित करने में प्रभावी माँग की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला। क्लासिकल अर्थशास्त्रियों ने लगभग विशेष रूप से आपूर्ति पक्ष (यथा, उत्पादन के प्रस्तुतीकरण पर) ध्यान केंद्रित किया था। इसके विपरीत, केन्जियन विश्लेषण ने दिखाया कि कुल माँग (यथा, आर्थिक अभिकर्ताओं द्वारा नियोजित खर्च) अल्पावधि में उत्पादन और रोजगार के स्तर को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कीन्स ने बताया कि कब प्रभावी माँग का अभाव आर्थिक मंदी का अंतर्निहित कारण होता है। जब व्यापक बेरोजगारी होती है तो वेतन दर में गिरावट की प्रवृत्ति देखी जाती है। यह प्रवृत्ति क्रय शक्ति को कम करके स्थिति को, और तदनुसार प्रभावी माँग को, और अधिक खराब कर देती है। अतएव, सरकार को राजकीय व्यय बढ़ाकर हस्तक्षेप करना चाहिए, उसे घाटे के बजट का सहारा लेना चाहिए। राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों का उपयोग अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त माँग का अंतःक्षेप करने के लिए किया जा सकता है, ताकि खर्च (कुल माँग) को बढ़ाया जा सके। इससे अर्थव्यवस्था में उत्पादन, आय एवं रोजगार वृद्धि होगी और अर्थव्यवस्था मंदी से बाहर निकलेगी।

ग्रेट डिप्रेशन (1929–33) के दौरान केन्जियन नीतियों की सफलता ने सरकार की सक्रिय भूमिका के लिए एक सशक्त आधार तैयार कर दिया। विशिष्ट रूप से केन्जियन अर्थशास्त्रियों ने विवेकाधीन राजकोषीय नीतियों के प्रयोग का समर्थन किया क्योंकि कीन्स ने मौद्रिक नीति की सीमाओं को इंगित किया था। यदि अर्थव्यवस्था चलनिधि के जाल में होगी तो परंपरागत मौद्रिक नीति पूर्णतः अप्रभावी रहेगी, जबकि राजकोषीय नीति तब भी प्रभावी सिद्ध होगी।

वर्ष 2007–2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान अधिकांश देशों ने आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए विस्तारवादी राजकोषीय नीति (राजकीय व्यय में वृद्धि) के केन्जियन नुस्खे का प्रयोग किया, हालाँकि इसके परिणामस्वरूप बजट घाटा और राजकीय ऋण का उच्च स्तर देखा गया। राजकीय ऋण पर उच्च ब्याज दर का बोझ बजट घाटे को और अधिक बढ़ाने में योगदान देता है, जिससे घाटे की निरंतरता विषयक चिंता बढ़ जाती है। इसके अलावा, उच्च ब्याज दर से निजी निवेश का 'क्राउडिंग आउट' (छोटी कंपनियों के निर्गम हेतु सही समय) हो सकता है।

आप जानते ही होंगे कि वर्ष 2020–2021 के दौरान कोविड-19 के कारण विश्व अर्थव्यवस्था को गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा था। आर्थिक गतिविधियों में कमी के कारण कुल माँग में भारी कमी आ गई थी। इस संकट की स्थिति के प्रति सरकारों की प्रतिक्रिया ने कीन्स द्वारा प्रतिपादित नीतियों के महत्व को सामने ला दिया था।

#### बोध प्रश्न 4

- 1) मुद्रा की माँग को प्रभावित करने वाले कुछ कारकों पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) मुद्रा की अपेक्षी माँग क्या है? यह मुद्रा फलन के प्रावण्य को कैसे प्रभावित करती है?

.....

.....

.....

3) 'चलनिधि जाल' से क्या अभिप्राय है? इसके निहितार्थ क्या हैं?

.....

.....

.....

4) दीर्घकालीन मंदी का सामना कर रही अर्थव्यवस्था में सरकार की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

5) कोई तीन कारण बताएँ कि नीति-निर्माता बढ़ते बजट घाटे के विषय में क्यों चिंतित होते हैं।

.....

.....

.....

## 2.7 सारांश

केन्ज़ियन मॉडल अनियोजित संसाधनों और प्रभावी माँग की कमी के साथ मंदी की स्थिति का सामना कर रही अर्थव्यवस्था के लिए उपयुक्त है। कीन्स मानते हैं कि वेतन और मूल्य अनम्यता के साथ बाजार अपूर्ण होते हैं। इस प्राधार के भीतर उत्पादन माँग-निर्धारित होता है। कुल माँग के किसी भी स्वायत्त घटक में वृद्धि का गुणक प्रभाव होता है, जिससे उत्पादन में कई दौर की वृद्धि होती है। उपभोग और निवेश फलनों पर हमारी चर्चा ने उन कारकों पर प्रकाश डाला जो कुल माँग के इन दो महत्वपूर्ण घटकों का प्रभावित करते हैं। केन्ज़ियन मॉडल में साम्यावस्था को नियोजित बचत और नियोजित निवेश के बीच समानता के रूप में देखा जा सकता है।

हमने इकाई में मितव्ययिता के विरोधाभास के विषय में जाना, जो दर्शाता है कि बचत करने की प्रवृत्ति में वृद्धि का परिणाम उस स्थिति में होता है जहाँ कुल बचत अपरिवर्तित रह सकती हो या फिर घट सकती हो। चूँकि उत्पादन इस मॉडल में माँग-निर्धारित होता है, नियोजित बचत में वृद्धि से कुल माँग कम हो जाती है और इस कारण उत्पादन घट जाता है, यह स्पष्ट करते हुए कि यहाँ मितव्ययिता का विरोधाभास क्यों है।

मुद्रा की माँग (चलनिधि अधिमान) आय में वृद्धि के साथ बढ़ती जाती है और ब्याज दर में वृद्धि के साथ घट जाती है। मुद्रा की अपेक्षी माँग संबंधी केन्जियन अवधारणा द्वारा मुद्रा की माँग और ब्याज की दर के बीच विपरीत संबंध को स्पष्ट किया जा सकता है।

हमने चलनिधि जाल के विषय में भी जाना – असामान्य रूप से कम ब्याज दर पर मुद्रा की माँग असीम रूप से लोचदार हो जाती है और परंपरागत मौद्रिक नीति अप्रभावी हो जाती है।

## 2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

### बोध प्रश्न 1

- 1) उपभोग फलन  $C = a + bY$  से दर्शाया गया एक रैखिक फलन होता है। यहाँ औसत उपभोग प्रवृत्ति (APS) चर  $Y$  के साथ घटती है जबकि सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) स्थिर रहती है।
- 2) (i) स्वायत्त उपभोग में कमी से उपभोग फलन में समानान्तर अधोमुखी खिसकाव होगा  
(ii) सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) में वृद्धि से उपभोग फलन का प्रावण्य बढ़ जाएगा।
- 3) आय या ब्याज के स्तर पर ध्यान न देते हुए स्वायत्त निवेश स्थिर रहता है। प्रेरित निवेश आय अथवा ब्याज दर या फिर दोनों पर निर्भर करता है। विस्तृत विवरण के लिए पाठांश 2.2.2 देखें।
- 4) जैसे-जैसे ब्याज दर घटती है, ऋण लेने की लागत घटती जाती है। इस प्रकार, कुछ परियोजनाएँ जो पहले अव्यवहार्य थीं, लाभदायक हो जाती हैं। इसलिए, ब्याज दर में कमी के साथ अधिक निवेश होता है।

### बोध प्रश्न 2

- 1) केन्जियन मॉडल इस धारणा पर आधारित है कि संसाधनों का कम उपयोग किया जाता है, कीमतें और वेतन दर अनम्य होती हैं, तथा उत्पादन एक समरूप वस्तु होती है।
- 2) (a) सकल माँग फलन  $Y = 30 + 0.75Y$  है। संतुलन आय 120 है।  
(b) संतुलन उत्पादन 140 तक बढ़ जाएगा।

(c) 4

(d) एकमुश्त कर के मामले में गुणक (b) में दिए गए स्वायत्त व्यय गुणक के समान होगा। दूसरी ओर, 0.1 की दर से आनुपातिक कर के मामले में गुणक को

घटाकर  $\frac{1}{1-0.75 \times 0.9} = 3.08$  कर दिया जाएगा।

(e) खुली अर्थव्यवस्था गुणक  $1/(1-b+m)$  से दर्शाया जाता है। अतः गुणक 1.8 होगा।

3) पाठांश 2.3.1 पढ़ें और उत्तर दें।

### बोध प्रश्न 3

- 1) (a) पाठांश 2.4.2 पढ़ें और चित्र 2.7 की व्याख्या करें।  
(b) बचत निवेश से कम होगी क्योंकि  $(S+T) = (\bar{I}+G)$
- 2) उत्तर के लिए चित्र 2.8 और चित्र 2.9 देखें।
- 3) (i)  $S = -10 + 2.25Y$ ; (ii) 120; (iii) 112

### बोध प्रश्न 4

- 1) आपको मुद्रा की विनिमय माँग, निवारक माँग और अपेक्षी माँग के विषय में चर्चा करनी चाहिए।
- 2) पाठांश 2.5.1 देखें और उत्तर दें।
- 3) यह वक्त ब्याज दर के लिए मुद्रा की माँग की असंवेदनशीलता को इंगित करता है जब ब्याज दर बहुत कम होती है। मौद्रिक नीति के परंपरागत लेखपत्र चलनिधि जाल में अप्रभावी हो जाते हैं।
- 4) सरकार को राजकीय व्यय में वृद्धि करनी चाहिए ताकि प्रभावी माँग में कमी न हों।
- 5) उच्च राजकोषीय घाटे से सरकार पर ऋण को बोझ बढ़ता है, ब्याज दर में वृद्धि होती है और निजी व्यय में कमी हो सकती है।